प्रेस विज्ञप्ति

ट्रैवेल फोटो जयपुर

घूमने की इच्छा पर एक समारोह

जयपुर में फरवरी 2016 में एक नई अंतरराष्ट्रीय आउटडोर फोटोग्राफी फेस्टिवल की शुरुआत होगी

www.travelphotojaipur.com

जयपुर, फरवरी 2016 : पहले ट्रैवेल फोटो जयपुर का आयोजन गुलाबी नगरी में 5-14 फरवरी 2016 के दौरान होने वाला है। इसका उद्घाटन राजस्थान की मुख्यमंत्री माननीय श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया करेंगी। राजस्थान सरकार का पर्यटन विभाग इसके आयोजन में साझेदारी कर रहा है और बिड़ला सम्राट चेतक सीमेन्ट उदारता से इसका समर्थन कर रहा है।

ट्रैवेल फोटो जयपुर में एक खास तरह की फोटोग्राफी प्रदर्शित की जाएगी और यह है ट्रैवेल फोटोग्राफी। पहले फेस्टिवल में दुनिया भर की 14 प्रदर्शनियां शामिल होंगी। इसका प्रदर्शन शहर में कुछ महत्त्वपूर्ण जगहों पर बड़े प्रिंट में किया जाएगा। इनमें हवा महल, अल्बर्ट हॉल म्युजियम और जवाहर कला केंद्र शामिल हैं। इनके जरिए इस बात पर रोशनी डाली जाएगी कि कैसे विरासत में मिली जगहों का उपयोग समकालीन कलात्मक उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है।

समारोह के पहले सप्ताह (5-7 फरवरी 2016) के दौरान चर्चा और स्क्रीनिंग की श्रृंखला होगी। यह कार्यक्रम के भाग के रूप में होगा ताकि फोटोग्राफी के शौकीनों को जयपुर बुलाया जा सके। भाग लेने की पुष्टि कर चुके कुछ पैनेलिस्ट हैं : युमि गोटो (सह-संस्थापक और क्यूरेटर, रीमाइंडर्स फोटोग्राफी स्ट्रांगहोल्ड), गाइल्स टिलोटसन (रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, लंदन के ऐकेडेमिक और पूर्व निदेशक, छॉमस सीलिग (क्यूरेटर, फोटो म्युजियम विन्टरहर, स्विजरलैंड), क्रिस्टिना डि मिड्डेल (पुरस्कार प्राप्त फोटोग्राफर, स्पेन), मॉरो बिडोनी (पूर्व फोटो एडिटर कलर्स पत्रिका), वासवो x वासवो (उदयपुर आधार वाला अमेरिकी फोटोग्राफर, रफल मिलच (फोटोग्राफर और संस्थापक, स्पुतनिक फोटोज) और पाबलो ओरित्ज मोनासटेरिओ (संस्थापक, सेंट्रो डी ला इमेजन, मैक्सिको डीएफ)। फेस्टिवल में दो विशेष हस्तक्षेप की पेशकश रहेगी। इनमें एक ट्रैवेलिंग फोटो स्टूडियो होगा जिसे डिजाइनर और फोटोग्राफर अराधना सेठ ने स्थापित किया है। इसके अलावा, किशनपोल बाजार में पूर्व जयपुर आर्ट स्कूल को फोटोग्राफर अक्षय महाजन ने अस्थायी प्रदर्शनी की जगह में बदल दिया है।

राजस्थान की मुख्यमंत्री माननीय श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया के नेतृत्व में राज्य ने कई पहल की श्रृंखला शुरू की है ताकि सांस्कृतिक पर्यटन को बेहतर किया जा सके जिससे कला के डेस्टिनेशन के रूप में प्रदेश की ख्याति मजबूत की जा सके। वैसे तो कई राज्यों ने लंबे समय तक परंपरागत शिल्प और विरासत पर ध्यान केंद्रित रखा है पर राजस्थान समकालीन संस्कृति पर भी ध्यान दे रहा है। जयपुर को पहले से इसके वार्षिक साहित्य समारोह के लिए जाना जाता है। इसमें हजारों लोग आते हैं। अब राज्यवार इस बात के प्रयास किए जा रहे हैं कि समकालीन विजुअल आर्ट्स, फोटोग्राफी और संगीत के लिए एक सहायक माहौल मुहैया कराया जा सके। इसके लिए विशेषज्ञों और भिन्न क्षेत्रों के सम्मानित पेशेवरों से सहयोग किया जा रहा है।

ट्रैवेल फोटो जयपुर के प्रोड्यूसर निखिल पडगांवकर ने कहा, " समय के साथ, फोटोग्राफी के शौकीनों के लिए फोटोग्राफी फेस्टिवल का आकर्षण वही हो सकता है जो जयपुर साहित्य समारोह का साहित्य प्रेमियों के बीच है। संभावनाएं अनंत हैं। ना सिर्फ इसलिए कि माध्यम के रूप में साहित्य के मुकाबले फोटोग्राफी बहुत आसान पहुंच में है बल्कि इसलिए भी कि जयपुर शहर में कई ऐसी जगहें हैं जिसे चित्रों की प्रदर्शनी के लिए अच्छे वेन्यु में बदला जा सकता है।"

ट्रैवेल फोटो जयपुर की आर्टिस्टिक डायरेक्टर लोला मैक डोउगल का कहना है, "जयपुर के अधिवासी भारत के सबसे ज्यादा पर्यटकों वाले और जाने-माने शहर में रहते हैं। वे तस्वीरें उतरवाने के आदी हैं। ट्रैवेल फोटो जयपुर के संग अब स्थिति बदल गई है और अब उनकी बारी है कि वे दुनिया भर के फोटोग्राफिक अजूबे देखें।"

संपादकों के लिए – फोटोग्राफर्स और आयोजन

जियाओजियाओ जू, चीन, शी हुओ (2014)

फरवरी 2014 में जू ने पहली बार उत्तर पश्चिम चीन का दौरा किया। यह देश का रफ और अनजाना हिस्सा है। उसका मकसद 'शी हुओ' की तस्वीर उतारना था। यह सदियों पुराना ग्रामीण समारोह है जिसका आयोजन चीनी नव वर्ष के आस-पास होता है। हुओ का मतलब होता है "आग" जो बुरी ताकतों को भगाता है। ऐसी ताकतें जो पुरानी पूजा, जादू टोना आदि से सक्रिय की जाती थीं। इस समारोह में कॉस्ट्यूम, उपकरण और प्रॉप्स आदि का उपयोग विस्तृत प्रदर्शन की श्रृंखला के भाग के रूप में होता है। इसे इस तरह डिजाइन किया जाता है कि नए साल में अच्छी फसल हो और भविष्य अच्छा रहे। अपने फोटो निबंध में उन्होंने कोशिश की है कि इस लोक कला से जुड़ी उत्सुकता, झुकाव, परिकथा, रहस्य और जुड़ाव को कैद किया जाए। उन्होंने बहुत कम उम्र में चीन में रहना छोड़ दिया था। फोटो से वे अपनी पहचान जान पाती हैं। इस श्रृंखला की तस्वीरें उसी अन्वेषण की खोज हैं। www.xiaoxiaoxu.com

सेरेना चोपड़ा, इंडिया, दि एनसीयंट भूटान डायरीज (2002-2006)

सेरेना चोपड़ा 12 साल से ज्यादा समय से भूटान जाती रही है और एक ऐसे समाज की तस्वीरें उतारती रहीं हैं जो अपनी संस्कृति की रक्षा करता हुआ आधुनिकता की ओर खिसकता मससूस कर रहा है। विशेष परमिट के साथ वे ट्रेक करके दूरदराज और प्रतिबंधित क्षेत्रों में जा चुकी हैं क्योंकि दूर-दराज के इन गांवों और यायावर समुदाय में आने के लिए कोई सड़क नहीं थी। सेरेना को भिन्न ग्रामीणों के जीवन का करीबी अनुभव था।

क्योंकि बार-बार के अपने दौरों के दौरान वह इनलोगों के साथ रह चुकी थी। सुश्री चोपड़ा ने इतने वर्षों में मानवीय भावनाओं का अर्काइव बनाया है जो देश की यात्रा के दौरान देखा गया है और जिसे "राष्ट्रीय ख़ुशी" की तलाश के रूप में पारिभाषित किया गया है और जो बहुत मशहूर हुआ है। कई तस्वीरों में आनुष्ठानिक मुखौटों को खास प्रमुखता दी गई है जो भिन्न देवी-देवताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। छोटे आकार के के भूटानी मुखौटे पहनने वाले के चेहरे को नाक तक ही ढंकते हैं और इसके साथ उन जगहों को खुला रखा जाता है जहां देवी-देवताओं की आंखों का चित्रण किया जाता है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि जो भी मुखौटा पहनता है वह फोटोग्राफर को उसी जगह से देखता है जो मुंह के लिए खुली होती है। इससे एक अलग तरह की दृष्टि कैद होती है। दूर का एक देश जो दूर होकर भी पास है, उसकी यह खोज एक अलग वर्ग में रखी गई है और इससे भूटान के लोगों के जीवन के बारे में जानकारी मिलती है। www.sepiaeye.com/serena-chopra

जॉर्ज ओसोडी, नाईजीरिया मोनार्क्स (2012-जारी)

पूर्व औपनिवेशिक नाईजीरिया में कई राजाओं के राज थे जिनका भविष्य अंग्रेजों के आने से बदल गया। 1963 में जब नाईजीरिया राष्ट्रमंडल में गणराज्य बना तो राजव्यवस्था औपचारिक तौर पर खत्म कर दी गई। हालांकि शाही परिवार राजनैतिक परिदृश्य पर प्रासंगिक बने रहे। अक्सर अपने समाज और राजनीतिज्ञों के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाते रहे। उन्हें अभी भी आम जनता का सम्मान मिलता है और उनका दर्जा ईश्वर जैसा है। खास हस्तियों को छोड़कर, फैशन की उनकी समझ आकर्षक भौतिकता वाली संस्कृति के बारे में जानकारी मुहैया कराती है। इन तस्वीरों के जरिए हम फोटोग्राफर जॉर्ज ओसोडी द्वारा अपने देश की उनकी खोज और नाईजीरिया के राजा जो किसी संवैधानिक पद पर नहीं होने के बाद भी शांति के साथ-साथ एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक विरासत का रखवाला होता है। जिग्गी गोल्डिंग ने क्यूरेट किया है। www.nigeriamonachs.com

लॉरेन्ट चेहेरे, फ्रांस, दि फ्लाइंग हाउसेज (2007-जारी)

लॉरेन्ट चेहेरे पुराने पेरिस की काव्यात्मक दृष्टि से प्रेरित हैं और पेरिस की सीमा के आस-पास स्थित सामान्य घरों को शानदार इमारतों में बदलते हैं और ऐसे प्रस्तुत करते हैं जैसे हवा में स्थिर जीवन हो। अपने शहरी संदर्भ और सड़की के अनजानेपन से अलग ये इमारतें इन रहने वालों की निजी और अलग-अलग कहानी सुनाती हैं। दूर से ये घर अस्तव्यस्त और केयरफ्री लगते हैं पर नजदीक से देखने पर इनका विवरण एक जटिल कहानी का खुलासा करता है। इस अतियथार्थ वाले विश्व में अचल संपत्ति बिल्कुल अलग बन जाती है। परिवहन का एक साधन जो हमें याद दिलाता है कि कई बार यात्रा शुरू करने के लिए सिर्फ संदर्भ बदलने की जरूरत होती है। www.laurentchehere.com.

गिडेऑन मेनडल, दक्षिण अफ्रीका / यूके, ड्राउनिंग वर्ल्ड (2007-जारी)

नौ साल तक दुनिया घूमने और बाढ़ की फोटोग्राफी करने के बाद दक्षिण अफ्रीका में जन्म लंदन में रहने वाले फोटोग्राफर गिडेऑन मेनडेल को पता है कि दो बाढ़ एक जैसी नहीं होती है। इसकी शुरुआत 2007 में हुई थी जब मेनडल ने कुछ ही हफ्ते के अंदर आई दो बाढ़ की तस्वीर खींची। एक बाढ़ यूके की थी और दूसरी भारत की। उन्होंने बमुश्किल यह उम्मीद की होगी कि उनकी तस्वीरें जलवायु परिवर्तन के बारे में सबसे स्पष्ट फोटोग्राफिक स्टेटमेंट बन जाएंगी और उन्हें प्रतिष्ठा वाला 2015 प्रिक्स पिकटेट मिलेगा। इन तस्वीरों और

करीबी तस्वीरों की खासियत यह है कि इसमें जो लोग दिखाए गए हैं वे ऐसे पोज कर रहे हैं जैसे किसी परंपरागत पोट्रेट के लिए पर सच यह होता है कि उनका परिवेश सामान्य होने से वंचित कर दिया गया है। मेनडल के घुमंतू स्वभाव ने उन्हें बाढ़ के पुराने कारणों, खासियतों और दुनिया भर की असुरक्षित स्थिति को जानने समझने के लिए प्रेरित किया है। www.gideonmendel.com

एटोर लाला, स्पेन, टावर ऑफ साइलेंस (2005-2008)

एटोर लारा ने उजबेकिस्तान की यात्रा की ताकि स्पैनिश राजदूत रुई डी क्लाविजो के मार्ग का अनुसरण किया जा सके जो 1403 से 1406 के बीच मध्यम एशिया से गुजरे थे। लारा का उद्देश्य राजनयिक के इतिहास की तुलना एक ऐसे देश की समकालीन स्थिति से करने की थी जो सोवियत संघ के विखंडन के बाद भारी बदलाव से गुजर रहा था। दोनों ही यात्री वैसे तो समय के लिहाज से अलग हैं पर उनका इरादा समान रूप से गंभीर है और यह उस अवधारणा को तलाशना है जिसने लगातार एशिया को जानने की कोशिश की है शायद इस स्वीकारोक्ति के रूप में कि ईसाइयत से अनछुई संस्कृति में अकल्पनीय अजूबे हैं। www.aitorlara.com

युनिस अडोर्नो, मैक्सिको, दि फ्लावर वीमेन (2012)

फ्लावर वीमेन उन ईसाई महिलाओं के एक समूह के जीवन की कहानियों का परीक्षण है जिन्होंने युनिस अडोर्नो को मैक्सिको के डुरंगो और ओन्डा जकाटेकास क्षेत्रों में अपने समाज के अंदर अंतरंग क्षणों और दैनिक अनुभवों तक पहुंच मुहैया कराई। ये तस्वीरें ईसाई संस्कृति की धारणाओं को बिगाड़कर रूढ़िवादी और कठोर बना दिया। इसके लिए इन महिलाओं के भावनात्मक संबंधों और इनके जीवन के सद्भावों पर रोशनी डाली। फोटोग्राफर ने इन महिलाओं से या तो स्पैनिश में या फिर जर्मन भाषा में बात की जो इस समाज में बोली जाती है। इसके अलावा इशारों में भी बात हुई और उन संकेतों का उपयोग किया गया जो दुनिया भर में मित्रता, राज, खुशी आदि व्यक्त करने के लिए उपयोग में लाए जाते हैं। ये तस्वीरें एक तरह से उसी चर्चा और उससे जुड़ाव का विस्तार हैं। अडोर्नो की राष्ट्रीयता तो वही है पर उन्होंने एक ऐसी संस्कृति के बीच काम करने की कोशिश की है जिसमें वे हमेशा एक बाहरी ही रहेंगी। www.euniceadorno.net

लुइस गोन्जालेज पलमा, ग्वाएटमाला

श्रृंखला, दि एन्युसिएशन (ग्रेसिएला डी ओलिवेरा के साथ 2007 का एक गठजोड़) असल में एक अध्ययन है जो एक क्लासिकल वेस्टर्न पेंटिंग्स के हाथों का अध्ययन है। इसके जरिए वर्जिन से एंजल गैब्रियल की उस घोषणा की जिक्र किया गया है कि वे जीजस की मां बनेंगी। हम हाथ की पेटिंग का फोटोग्राफी के इस परिष्कृत बदलाव को पढ़ना चाहते हैं जो हाथ के कुछ इशारों की एकरूपता के परावर्तन के रूप में होगा। जब हम किसी ऐसी जगह में होते हैं जहां की भाषा अनजानी होती है तो हाथ के इशारे अपने आप संचार के पहले साधन बन जाते हैं। 'वाया 7' (2008) में घूरना नीचे की तरफ बढ़ता है और हमारे लिए पेश होती है जूतों की तस्वीरें। ये बड़े पैमाने पर बनाए जाने वाले कामकाजी वर्ग के लोगों के जूते हैं और तब तक उपयोग में लाए जाते हैं जब तक टूट कर बिखर न जाएं। ये उनलोगों के होते हैं जो अपने दैनिक जीवन की मुश्किलों में इस तरह फंसे होते हैं कि वे यात्रा करने का सपना भर देख सकते हैं। इससे हमें याद आता है कि यह ऐसी लक्जरी है जो कई लोगों की पहुंच से बाहर है। www.gonzalezpalma.com

अन्ना फॉक्स, यूनाइटेड किंगडम, दि पुलिकली टाइगर्स *(*2011-2012)

पुलिकली नाटक (मलयालम में 'पुलि' का मतलब होता है चीता या शेर जबकि 'कली' नाटक के लिए है) एक रिवाजी बदलाव है जो आमतौर पर ओणम के दौरान किया जाता है। यह केरल में हर साल मनाया जाता है और फसल कटने के बाद खुशी मनाने के लिए मनाया जाता है। फॉक्स ने अपने बड़े फॉर्मैट के कैमरे और एक आग्रह के साथ पुलीज से संपर्क किया इन्हें शूट करने से ठीक पहले और उन्होंने उनसे एक डांस पोज देने के लिए कहा जो स्टूडियो की फोटो की एकरसता का जवाब हो और इसमें प्रदर्शन की बेहतरी भी हो। उन्होंने टाइगर परफॉर्मर्स से अपने मुखौटे हटाने के लिए भी कहा ताकि कल्पना और वास्तविकता के अंतर का खुलासा किया जा सके। फॉक्स एक ट्रैवेलर फोटोग्राफर हैं और भारत के लिए उनके मन में एक हल्का झुकाव है। वे पहली बार 1984 में भारत आई थीं और उसके बाद से कई दफा आ चुकी हैं। www.annafox.co.uk

कैथरिन बलेट, फ्रांस, लुकिंग फॉर दि मास्टर्स इन रिकार्डोज गोल्डन शूज *(*2013-2015)

कुछ साल पहले गर्मी के एक दिन पेरिस के एक कैफे में कैथरिन बैलेट अपने मित्र रिकार्डो के साथ सुबह का नाश्ता कर रही थीं। अचनाक उन्हें अपने मित्र के बारे में ख्याल आया कि वह मशहरू पिकासो जैसे लगा रहा है। वैसा ही जैसा रॉबर्ट डोइसन्यू ने उन्हें चित्रित किया है। तकरीबन खेल रहे बच्चों की तरह दोनों में सहमति हुई कि मशहूर चित्र को फिर से तैयार किया जाए। इसके बाद "सर्च फॉर दि मास्टर्स" की शुरुआत हुई। यह एक ऐसी श्रृंखला है जिसमें आज 110 तस्वीरें हैं। इसे 2016 में देवी लेविस प्रकाशित करेंगे। इस तरह, सत्तर वर्षीय रिकार्डो फोटोग्राफर के लिए कला के केंद्र, एक करिश्माई सिटर बन गए जिनका इन नई कृतियों में योगदान रहा और इसमें उनके जीवन का एक हिस्सा था : दि गोल्डन शूज। ये जूते जल्दी ही लीटमोटिफ बन गए जिससे फोटोग्राफी के यादगार क्षणों को फिर से याद किया जाना था। 1839 के एक सेल्फ पोट्रेएट से समकलानी प्रवृत्तियों तक। बहुत ही समकालीन व्यवहार, उपयुक्तता का उपयोग करते हुए फोटोग्राफी के इतिहास के जरिए यह यात्रा याददाश्त के बारे में हमारी समझ पर सवाल उठाती है और हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि कोई तस्वीर कैसे यादगार बनती है। www.catherinebalet.com

निशांत शुक्ला, भारत, ब्रीफ एनकाउंटर्स (2008-2009)।

आज की तारीख तक भारत में लंबी दूरी की यात्रा के लिए सबसे पसंदीदा साधन रेलगाड़ी ही बनी हुई है। और एक थीम के रूप में यात्रा ने फोटग्राफर निशांत शुक्ला को कुच वर्षों तक व्यस्त रखा है। 2008 में शुक्ला ने जम्मू तवी से कन्याकुमारी की एक ट्रेन यात्रा की और 2009 में ओखा से गुवाहाटी की। इस तरह, उन्होंने रेलवे के मौजूदा ग्रिड की पुनर्व्याख्या अपने निजी अनुभव से की। नतीजा उन लोगों के पोर्ट्रेट की श्रृंखला है जिनसे उनकी मुलाकात यात्रा के दौरान हुई। इस कोशिश के बारे में शुक्ला कहते हैं, "लगातार ट्रेन की एक जैसी पृष्ठभूमि में अलग तरह के लोगों की रिकॉर्डिंग करके कैमरे ने मुझे लोगों से चर्चा करने और यात्रा के दौरान अपने साथियों को घूरने का लाइसेंस दे दिया।" www.nishantshukla.com

सिया सिंह अकोई, भारत, दि डॉग शो प्रोजेक्ट (2009-2010)

2009-10 की सर्दियों में सिया सिंह अकोई ने डॉग शोज के क्रॉस कंट्री टुअर की शुरुआत की। इसके तहत चंडीगढ़ और चेन्नई के बीच 12 शहरों का दौरा किया। छोटी बारीकियों के प्रति भी दर्शकों का ध्यान आकर्षित करने और सामने खड़े अपने सबजेक्ट्स को अपने बारे में ज्यादा जागरूक अहसास कराने के लिए सिया सिंह ने यात्रा के दौरान अपने साथ कपड़े का बना 9×9 फीट का अस्थायी स्टूडियो भी रखा। सिया सिंह अकोई डॉग शोज की वाणिज्यिक प्रकृति का जानने की इच्छुक थीं। उनका मानना था कि कुत्तों के प्रजनन का बाजार 'मनुष्य और उसके कुत्ते' के बीच संबंध बदल रहा है। वे कारोबारी हितों से बनने वाले इस नए संबंध की बारीकियों को जानने की इच्छुक थीं। कुछ फोटो निबंध ऐसे हैं जो देखने वाले में उन परिस्थितियों को लेकर एक उत्सुकता जगाते हैं जब ये तस्वीरें उतारी गई थीं। यही नहीं, फोटोग्राफर की यात्रा को समझने की भी इच्छा होती है। सिंह अकोई की श्रृंखला ऐसा ही एक उदाहरण है जिसमें यात्रा करने के उनके दृढ़ निश्चय, कई बार अपने सबजेक्ट की तस्वीर उतारने के लिए से उन्नोंने मुश्किल स्थितियों में भी यात्रा की है। इससे हरेक पोर्ट्रेट रेखांकित होता है। अकोई खुद कुत्ता प्रेमी हैं और अपने आठ कुत्तों को कभी किसी शो में परेड नहीं कराया है। उनका कहना है, "मेरे कुत्ते कॉलर नहीं पहनते हैं और पट्टे में बंध कर चलना नहीं जानते हैं।" और, "मुमकिन है, मेरा सबसे हैंडसम वाला निर्णायक को ही काट खाएगा।"

MAfIA, अर्जेनटीना, एल्टो मार्च 2014

वर्ल्ड टूरिज्म ऑर्गनाइजेशन के मुताबिक फुर्सत में समय गुजारना यात्रा का मुख्य मकसद होता है और यह करीब 60 प्रतिशत पर्यटकों के मामले में है। 19वीं सदी के दूसरे हिस्से में जब पहली बार बड़े पैमाने पर पर्यटन का मामला सामने आया तो समुद्र का किनारा पर्यटकों के घूमने के लिहाज से शिखर की जगह के रूप में उभरा। संयोग से इसी अवधि में फोटोग्राफी का भी तेजी से विकास हुआ और यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है कि दोनों में एक खास किस्म का संबंध बन गया है और तस्वीरों से पर्यटन के अनुभवों की पुष्टि होती है या उन्हें वैधता मिलती है। अर्जेनटीना के तटीय शहर मर डेल प्लाटा में 1950 के दशक से लेकर 1970 के दशक तक निर्माण की तेजी रही और इसके बाद चली 'विकास' की आंधियों ने इसे अर्जेनटीना के सबसे बड़े बीच रेसॉर्ट में बदल दिया है। एक दिसंबर 2013 से 26 जनवरी 2014 के बीच के दो महीने से भी कम समय में करीब 2 मिलियन (20 लाख) पर्यटकों ने मर डेल प्लाटा का दौरा किया है। यह संख्या इस शहर की कुल आबादी के चार गुना से ज्यादा है। इन तस्वीरों में अर्जेनटीना के लोग समुद्र स्नान करने वालों की भीड़ के बीच निर्बाध रूप से अपने शरीर का प्रदर्शन करते हैं। फ्लैश का उपयोग स्टूडियो का सा अहसास कराता है और मामले को संदर्भ से अलग करता लगता है। इसका यह असर होता है कि जिसकी तस्वीर उतारी जा रही है उसे खास बना दिया जाता है। इस बात के बावजूद कि उसके आस-पास मनुष्यों का सागर होता है और इसके साथ ही यह सवाल तो रहता ही है कि बाकी सब का क्या हुआ tourism.www.somosmafia.com.ar

रफल मिलच, पोलैंड, इन दि कार विद आर (2010)

'इन दि कार विद आर' एक पुस्तक परियोजना थी जो एक पोलिश फोटोग्राफर रफल मिलच की सड़क यात्रा के परिणामस्वरूप तैयार हुई थी। यह यात्रा आईसलैंड के लेखक हलडर ब्रेज्डिफिरोड के साथ 2010 में की गई थी। "टू डू दि रिंग" आईसलैंड की एक अभिव्यक्ति है। जिसका मतलब मार्ग 1 का दौरा है। यह वह हाईवे है जो देश

को घेरता है। यह ऐसी यात्रा है जो आईसलैंड के लोग अपने जीवन में कभी ना कभी करते हैं। इस कोशिश भले ही ऊपर से कुछ खास नहीं दिखाई देता है पर लेखक हमें चेतावनी देते हैं कि यह चक्कर खतरों से भरा है। इस सड़क पर बहुत सी यात्राओं का अंत तलाक या गर्भधारण में हुआ है। दूसरों के साथ यात्रा करने के ये खतरे और गंभीर हो जाते हैं जब यात्री अपनी भिन्न पसंद के कारण अलग रिद्म और रफ्तार अपनाते हैं। "फोटोग्राफर के साथ यात्रा करना काफी कुछ गर्लफ्रेंड के साथ शॉपिंग करने की तरह है। जो सभी कपड़े देखना और आजमाना चाहती है – कभी ना खत्म होने वाला काम है।" 'इन दि कार विद आर' एक ऐसी यात्रा का दिलचस्प वर्णन है जो गलतफहमियों के बावजूद एक दूसरे से जुड़े के दो अलग तरीके बना देता है। "जब घूमने और (फोटोग्राफी की?) की बात हो तो आप क्या देखते हैं उसका मतलब होता है और इसका कम कि आप इसे कैसे देखते हैं।" www.rafalmilach.com

कोलैटरल एक्जीबिशन : करेन नोर, इंडिया सांग : करेन नोर की फोटोग्राफी सांस्कृतिक विरासत और आदर्श से जुड़ी उसकी खासियतों का पता लगाती है। औपनिवेशीकरण के बाद की स्थितियों से जुड़े सवाल और सौंदर्य से इसके संबंध 1980 के बाद से उनकी फोटोग्राफिक कृतियों के मूल में रहे हैं। उनकी कृति इंडिया सांग में भारत से जुड़ी कहानियों और मिथकों पर अनुसंधान है। इसके तहत पशुओं की फोटोग्राफी की गई है और उन्हें उत्तर प्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक, तमिलनाडु और महाराष्ट्र के मंदिरों और महलों में स्थापित किया गया और इसमें वास्तविकता तथा कल्पना के बीच के अंतर को धुंधला कर दिया गया है। करेन नोर ने 2011 का वी इंटरनेशनल फोटोग्राफी पिलर सिटोलर प्राइज जीता था। उन्हें ड्यूश बोर्से के लिए 2011 और 2012 में तथा प्रिक्स पिकटेट के लिए 2012 में नामांकित किया जा चुका है। उनके कार्य दुनिया भर के संग्रह में शामिल हैं। इनमें टेट म्युजियम और पोमपिडोऊ म्युजियम भी हैं। http://karenknorr.com. प्रदर्शनी सौजन्य : तस्वीर आर्ट्स .www.tasveerarts.com.

<u>विशेष हस्तक्षेप</u>

दि मर्चेन्ट ऑफ इमेजज : जयपुर एडिशन

पुरस्कार विजेता प्रोडक्शन डिजाइनर / कला निदेशक और फोटोग्राफर अराधना सिंह (Aradhana Seth) दुनिया घूमने वाला अपना फोटो स्टूडियो लेकर जयपुर आई हैं और मशहूर हवा महल में रह रही है। सेठ के पोर्टफोलियो में दीपा मेहता की फिल्म अर्थ में प्रोडक्शन डिजाइन और वेस एंडरसन की दार्जिलिंग लिमिटेड में कला निर्देशन शामिल है। अराधना ने इस प्रोजेक्ट की सुरुआत अपने होम स्टूडियो में की थी और पहली बार इसे जनता के लिए वैंकूवर, कनाडा में होने वाले इंडियन समर फेस्टिवल में पेश किया। जहां इसने शहर की कल्पनाशीलता को कैद किया। जयपुर एडिशन में एक खास पृष्ठभूमि है। इसे राजस्थान के पेन्टर के समूह ने तैयार किया है और इसमें जनता को आमंत्रित किया जाएगा कि वे पर्यटकों की तरह चित्रित किए जाएं। आपको बस इतना करना है कि इस गठजोड़ वाली परियोजना के भाग बनें। इसके लिए रुकें और अपनी फोटो उतरवाएं। यह 'दिल्ली आई लव यू' और 'दि मर्चेन्ट ऑफ इमेजेज स्टूडियो' (बौद्धिक संपदा खास डिजाइन की गाड़ी) के साथ मिलकर हो। स्थाना : हवा महल शुक्रवार 5 और शनिवार 6 । समय : 10.00 - 12.30 / 14.00 - 16.30 । प्रवेश : निशुल्क

आपके बारे में सोचना *(Thinking of You)*

स्थान के लिहाज से खास फोटोग्राफिक हस्तक्षेप अक्षय महाजन द्वारा। व्हाट्सऐप्प, इंस्टाग्राम और ट्वीटर के जमाने में हम नाम से ही पुराने, "पोस्टकार्ड" को याद करते हैं। अक्षय ने किशनपोल बाजार स्थित पुराने जयपुर आर्ट स्कूल को नियंत्रण में ले लिया है और उस जगह पर एक खास प्रदर्शनी तैयार की है और यह पुराने हो चुके पोस्टकार्ड, इसके संदेशों और कैसे यह भिन्न यात्राओं की दृष्टि को आकार देता था - के सम्मान और याद में है। उसे श्रद्धांजलि देने के लिए है। इसे स्थानीय रंग देने के लिए हम इसमें स्थानीय रंग डाल रहे हैं और यह मेला स्थल पर मौजूदा राजस्थान के फोटोग्राफर के सौजन्य से किया जाएगा जैसा फोटोग्राफर अराधना सेठ ने दर्ज किया है। हमसे जुड़िए और अपनी याद "काश मैं भी यहां होता" के रूप में लिखिए। मौसम की चर्चा कीजिए। श्रेय : रंगीन फोटो अराधना सेठ। श्वेत श्याम में कुछ तस्वीरें अराधना सेठ के संग्रह से हैं जबकि अन्य अक्षय महाजन के अनुसंधान के परिणामस्वरूप हैं।

स्थान : पुराना जयपुर आर्ट स्कूल, किशनपोल बाजार I समय : 10:00 - 16:30 I प्रवेश : निशुल्क

बिन्ड्स ट्रैवेलिंग फोटोबुक लाइब्रेरी

बिन्ड फोटो पुस्तकों का एक संग्रह तैयार करेगा जो ट्रैवल के थीम पर केंद्रित होगा। इसमें भारत और दुनिया भर में फोटोग्राफी के इतिहास से संबंधित कार्यों के साथ-साथ समकालीन प्रकाशनों का मेल रहेगा। फोटो पुस्तकों को देखने के लिए 5 से 7 फरवरी तक रखा जाएगा।

स्थान : जवाहर कला केंद्र I समय : शुक्रवार 5 फरवरी शाम 16:00 - 19:30 I शनिवार 6 फरवरी 10.30 - 14.00 / 16.00 - 19:30 I रविवार 7 फरवरी 10.30 - 14.00. http://bindcollective.in/

ट्रैवेल फोटो जयपुर के बारे में आगे की जानकारी और उच्च रिजोल्यूशन वाली तस्वीरों के लिए कृपया संपर्क करें मेघना दत्ता, अकाउंट डायरेक्टर फ्लिंट पीआर, ई मेल : *meghna.dutta@flint-pr.com* मोबाइल: +91 9711167343; ऑफिस: +91 11 4711 9815 / वेबसाइट : www.flint-pr.com

RAJASTHAN
YOU HAVEN'T SEEN IT ALL!

बिरला सम्राट
चेतक
सीमेंट